International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 11, November 2017
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

दृष्टिबाधित और दृष्टिवान विधार्थियों के सामाजिक कौशलों का तुलनात्मक अध्ययन

शोधार्थी

गीता शर्मा
सहायक प्रोफेसर,
मिनर्वा कॉलेज
ऑफ एजुकेशन
तरावड़ी करनाल
हरियाणा

डॉ उपकार सिंह
सहायक प्रोफेसर,
युनाईटिड कॉलेज
ऑफ एजुकेशन
कौल कैथल

सारांश

हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली कई तरीकों में सन्तोषजनक नहीं है। बच्चों की देखभाल भी अच्छी तरह नहीं हो पा रही हैं। बच्चों के लिए शिक्षा की योजना बनाते समय व्यक्तिगत भेदों को न तो कोई महत्व दिया है और न ही उन पर विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा का क्षेत्र भी बहुत ही कम विकसित हुआ है। इस शोधकार्य में दृष्टिबाधित और दृष्टिवान विधार्थियों के सामाजिक कौशल के तुलनात्मक अध्ययन में चंडीगढ़ और नरवाना के दो स्कूलों से 50-50 विधार्थियों का चयन आकस्मिक न्यायदर्श के द्वारा किया गया ।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

अध्ययन का विश्लेषण करने के बाद निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि दृष्टिबाधित व दृष्टिवान छात्रों के सामाजिक कौशल में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विशेष शब्द : विशेष शिक्षा, दृष्टिबाधित व दृष्टिवान, सामाजिक कौशल

भूमिका

मनुष्य को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाने का श्रेय शिक्षा को ही जाता है। शिक्षा के माध्यम से ही संसार की वैज्ञानिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति सम्भव हो सकी है। मनुष्य को पशुता से ऊँचा उठाकर एक तार्किक प्राणी बनाने में शिक्षा की अहम भूमिका रही है। मानव जाति आज जिस सभ्यता के शिखर पर पहुँच गई है, उसकी मूल प्रवृत्तियों में परिवर्तन का ही परिणाम है, जो कि शिक्षा द्वारा ही किया जाता है। अत: व्यक्ति को सभ्य सामाजिक प्राणी बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली कई तरीकों में सन्तोषजनक नहीं है। बच्चों की देखभाल भी अच्छी तरह नहीं हो पा रही हैं। बच्चों के लिए शिक्षा की योजना बनाते समय व्यक्तिगत भेदों को न तो कोई महत्व दिया है और न ही उन पर विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा का क्षेत्र भी बहुत ही कम विकसित हुआ है।

मनुष्य के भीतर कुछ जन्मजात शक्तियाँ निहित होती हैं तथा इन्हीं प्रतिभाओं के प्रकट होने से ही शक्ति का विकास होता है। यदि इन शक्तियों को सामने आने के उचित अवसर प्राप्त नहीं होते तो मनुष्य का विकास अधूरा रह जाता है तथा वह अपने भीतर छिपी हुई प्रतिभा का लाभ उठाने से वंचित रह जाता है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज अपने नागरिकों की जन्मजात एवं छिपी हुई योग्यताओं के विकास हेतु सजग रहता है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास होता

है। जिससे उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि होती है। इस बात में कोई संदेह नहीं कि शिक्षा ही व्यक्ति के व्यवहार को आदर्श बनाती है। शिक्षा की यह प्रक्रिया मनुष्य के जन्म से आरंभ होकर उसकी मृत्यु तक किसी–न–किसी रूप में उसके साथ चलती ही रहती है।

सामाजिक कौशल भी व्यक्ति की सामाजिक कार्यकुशलता एवं विकास के परिचायक है। बच्चों को खेल व्यायाम, संगीत आदि का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे ये बच्चे समाज बच्चों के लिए शिक्षा की योजना बनाते समय व्यक्तिगत भेदों को महत्व दिया जाना चाहिए । शिक्षा का अर्थ बालक का सर्वांगीण विकास करना, उनके व्यक्तित्व का विकास करना है।

दृष्टिबाधित बालक समाज के लिए बिल्कुल अयोग्य नही होते यदि उनको शैक्षिक सुविधाएं और प्रशिक्षण प्रदान किया जाये तो वे स्वयं को आत्मनिर्भर बना सकते हैं और समाज के लिए कुछ कर सकते हैं जिससे उनके व्यक्तित्व पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।

शोध के उद्देश्य

1. दृष्टिबाधित एवं दृष्टिवान विद्यार्थियों के सामाजिक कौशलों का अध्ययन करना।
2. दृष्टिबाधित एवं दृष्टिवान विद्यार्थियों के सामाजिक कौशलों में अन्तर का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. दृष्टिबाधित एवं दृष्टिवान विद्यार्थियों के सामाजिक कौशलों में कोई अन्तर नहीं होगा।

अध्ययन की सीमाये

1. प्रस्तुत अध्ययन हरियाणा राज्य के तहसील नरवाना व केन्द्र शासित प्रदेश चण्डीगढ़ के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
2. वर्तमान अध्ययन केवल 100 विद्यार्थियों पर किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में केवल कक्षा 8वीं से 10वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है ।

प्रतिचयन

दृष्टिबाधितों के लिए शिक्षण संस्थान, सैक्टर-26 चण्डीगढ़ से 50 विद्यार्थी व आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नरवाना से 50 विद्यार्थियों का चयन आकस्मिक न्यादर्श के द्वारा किया गया है ।

शोध विधि

इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

उपकरण

अरूण कुमार सिंह और अल्पना सैन गुप्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग अध्ययन के लिए उपकरण के रूप में किया गया है ।

सांख्यिकीय तकनीक

आंकड़ों के परीक्षण के लिए प्रतिशत विधि और टी-टैस्ट का प्रयोग किया गया ।

विश्लेषण एवं व्याख्या

खेलने में हार जाने पर क्या आप अपने दोस्तों को दोषी समझ कर उसे भला-बुरा कहते हैं?

तालिका 1

क्रं.सं.	विद्यार्थी	N	प्रतिक्रिया		प्रतिशत	
			हाँ	नही	हाँ	नही
1	दृष्टिबाधित	50	04	46	08%	92%
2	दृष्टिवान	50	36	14	72%	28%
		100	40	60	40%	60%

तालिका 1 से यह निष्कर्ष निकलता है कि 08% दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का कहना है कि हाँ खेलने में हार जाने पर वह अपने दोस्तों को दोषी समझ कर उसे भला-बुरा कहते हैं जबकि 92% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। वहीं दूसरी ओर 72% दृष्टिवान विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ खेलने में हार जाने पर वह अपने दोस्तों को दोषी समझ कर उसे भला-बुरा कहते हैं जबकि 28% विद्यार्थियों ने नही में उत्तर दिया। इस प्रश्न की प्रतिक्रिया के रूप में दृष्टिवान व दृष्टिबाधित छात्रों के मतों में पाए जाने वाले अन्तर के आधार पर हमें पता चलता है कि इन छात्रों के मतों में जो अन्तर है उससे इनके अलग-अलग सामाजिक कौशलों का बोध होता है।

क्या माता-पिता के साथ आपका सम्बंध परिवार के दूसरे सदस्यों की अपेक्षा बहुत अच्छा है?

तालिका 2

क्रं.सं.	विद्यार्थी	N	प्रतिक्रिया		प्रतिशत	
			हाँ	नही	हाँ	नही
1	दृष्टिबाधित	50	48	02	96%	04%
2	दृष्टिवान	50	48	02	96%	04%
		100	96	4	96%	4%

तालिका 2 से यह निष्कर्ष निकलता है कि 96% दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का कहना है कि हाँ माता-पिता के साथ उनका सम्बंध परिवार के दूसरे सदस्यों की अपेक्षा बहुत अच्छा है जबकि 04% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। वहीं दूसरी ओर 96% दृष्टिवान विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ माता-पिता के साथ उनका सम्बंध परिवार के दूसरे सदस्यों की अपेक्षा बहुत अच्छा है जबकि 04% विद्यार्थियों ने नही में उत्तर दिया। इस प्रश्न की प्रतिक्रिया के रूप में हम पाते है कि दृष्टिबाधित व दृष्टिवान छात्रों के मतों के आधार पर जो अन्तर पाया गया है उसमें विशेष अन्तर नहीं है। अत: इस आधार पर हम पाते है कि इनके सामाजिक कौशलों में कोई विशेष अन्तर नहीं है ।

क्या आप किसी सामाजिक कार्य में दायित्व लेने में सबसे आगे रहते हैं?

तालिका 3

क्रं.सं.	**विद्यार्थी**	N	**प्रतिक्रिया**		**प्रतिशत**	
			हाँ	नही	हाँ	नही
1	दृष्टिबाधित	50	48	02	96%	04%
2	दृष्टिवान	50	32	18	64%	36%
		100	80	20	80%	20%

तालिका 3 से यह निष्कर्ष निकलता है कि 96% दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का कहना है कि हाँ किसी सामाजिक कार्य में दायित्व लेने में वह सबसे आगे रहते हैं जबकि 04% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। वहीं दूसरी ओर 64: दृष्टिवान विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ किसी सामाजिक कार्य में दायित्व लेने में वह सबसे आगे रहते हैं जबकि 36% विद्यार्थियों ने नही में उत्तर दिया। इस पश्न की प्रतिक्रिया के रूप में हम पाते है कि दृष्टिबाधित और दृष्टिवान छात्रों के मतों के आधार पर अन्तर पाया

जाता है अत: इस आधार पर हम कह सकते है की इस प्रकार के सामाजिक कोशलों के लिए इन छात्रों के सामाजिक कौशल अलग-अलग है ।

क्या आपकी अपने भाई-बहन से अक्सर किसी न किसी बात पर कहा-सुनी हो जाती है?

तालिका 4

क्रं.सं.	**विद्यार्थी**	N	**प्रतिक्रिया**		**प्रतिशत**	
			हाँ	नही	हाँ	नही
1	दृष्टिबाधित	50	31	19	62%	38%
2	दृष्टिवान	50	25	25	50%	50%
		100	56	44	56%	44%

तालिका 4 से यह निष्कर्ष निकलता है कि 62% दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का कहना है कि हाँ उनकी अपने भाई-बहन से अक्सर किसी न किसी बात पर कहा-सुनी हो जाती है जबकि 38% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। वहीं दूसरी ओर 50% दृष्टिवान विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ उनकी अपने भाई-बहन से अक्सर किसी न किसी बात पर कहा-सुनी हो जाती है जबकि 50% विद्यार्थियों ने नही में उत्तर दिया। इस प्रश्न के प्रति दृष्टिबाधित व दृष्टिवान छात्रों की प्रतिक्रिया में कोई विशेष अन्तर नहीं है । जिसके आधार पर हम इनको एक समान सामाजिक कौशल के मान सकते है ।

क्या आपको लोगों से मिलना-जुलना बहुत पसन्द है?

तालिका 5

क्रं.सं.	विद्यार्थी	N	प्रतिक्रिया		प्रतिशत	
			हाँ	नही	हाँ	नही
1	दृष्टिबाधित	50	40	10	80%	20%
2	दृष्टिवान	50	29	21	58%	42%
		100	69	31	69%	31%

तालिका 5 से यह निष्कर्ष निकलता है कि 80% दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का कहना है कि हाँ उनको लोगों से मिलना-जुलना बहुत पसन्द है जबकि 20% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। वहीं दूसरी ओर 58% दृष्टिवान विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ उनको लोगों से मिलना-जुलना बहुत पसन्द है जबकि 42% विद्यार्थियों ने नही में उत्तर दिया। इस प्रश्न की प्रतिक्रिया के रूप में पाए जाने वाले अन्तर के आधार पर हम इन छात्रों का सामाजिक कौशल में अन्तर का बोध होता है ।

क्या आप नये लोगों से बहुत जल्दी मित्रता कर लेते हैं?

तालिका 6

क्रं.सं.	विद्यार्थी	N	प्रतिक्रिया		प्रतिशत	
			हाँ	नही	हाँ	नही
1	दृष्टिबाधित	50	27	33	54%	66%
2	दृष्टिवान	50	24	26	48%	52%
		100	51	49	51%	49%

तालिका 6 से यह निष्कर्ष निकलता है कि 54% दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का कहना है कि हाँ वे नये लोगों से बहुत जल्दी मित्रता कर लेते हैं जबकि 66% विद्यार्थियों ने

नहीं में उत्तर दिया। वहीं दूसरी ओर 48% दृष्टिवान विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ वे नये लोगों से बहुत जल्दी मित्रता कर लेते हैं जबकि 52% विद्यार्थियों ने नही में उत्तर दिया। इस प्रश्न की प्रतिक्रिया के रूप में हम पाते है कि दृष्टिवान व दृष्टिबाधित छात्रों के मतों के आधार पर जो अन्तर पाया गया है उसमें कोई विशेष अन्तर नहीं है । अत: इस आधार पर हम पाते है कि इनके सामाजिक कौशलों में विशेष अन्तर नहीं है ।

मुख्य परिणाम

दृष्टिबाधित और दृष्टिवान छात्रों का मध्यमान क्रमश: 26.24 और 27.72 है । अत: हम यहां यह पाते है कि दृष्टिबाधित छात्रों का मध्यमान दृष्टिवान छात्रों से कुछ कम है । परन्तु इन दृष्टिबाधित व दृष्टिवान छात्रों के तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करते हुए टी-टैस्ट का प्रयोग करने पर टी-वैल्यू 1.57 प्राप्त हुई है । जो किसी भी स्तर पर (0.01 तथा 0.05 सार्थकता स्तर) पर सार्थक नहीं है । अत: परिकल्पना का स्वीकार किया जाता है ।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा के क्षेत्र में कोई भी अनुसंधान कार्य तब तक तर्कपूर्ण नही होता जब तक उसका शैक्षिक निहितार्थ न हो। किसी भी अनुसंधान कार्य का उद्देश्य यह होता है कि सम्बन्धित क्षेत्र में सुधार करवाना और इसक महत्व प्रत्येक सम्बन्धित व्यक्ति के जीवन में होना आवश्यक है । इस अनुसंधान में दृष्टिवान और दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सामाजिक कौशलों का अध्ययन किया गया है। इस अनुसंधान से प्राप्त परिणामों की सहायता से उनके सामाजिक कौशलों के विकास में सहायता की जा सकती है। अनुसंधान के परिणामों से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल के विकास

में अभिभावकों तथा अध्यापकों का योगदान पाया जाता है। दृष्टिवान और दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के समाजिक कौशलों के विकास के लिए हम निम्नलिखित कदम उठा सकते है–

1. विद्यालय में बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए स्वतन्त्र वातावरण देना चाहिए।
2. दृष्टिबाधित बच्चों में पाई जाने वाली हीन भावना को दूर किया जाना चाहिए। इसके लिए उन्हें अधिक से अधिक पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ।
3. दृष्टिबाधित बालकों के लिए जमा पाठ्यक्रम क्रियाओं का निर्माण करना चाहिए।
4. बच्चों में सामाजिक कार्यो को करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

आगामी शोध कार्य के लिए सुझाव

1. इस अनुसंधान के लिए अन्य क्षेत्रों को भी लिया जा सकता है।
2. अधिक से अधिक विद्यालयों के नमूनों को लिया जा सकता है।
3. अनुसंधान कार्य को अन्य जिलों में भी जहाँ दृष्टिहीन विद्यालय हों वहां पर भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अब्राहम, एम. (1985). ऐ स्टडी ऑफ सर्टेन साइको-सोशल कोरिलेटस ऑफ मेंटल हैल्थ स्टेटस ऑपफ यूनिवर्सिटी एनटरैन्टस ऑफ केरला इन : एम.बी. बुच (Ed.) पफोरथ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वोल्युम II (P1351) न्यू देहली एन.सी. आर.टी।

अग्रवाल, वाई.पी. (1990). स्टैटटिक्सकल मैथेडस, कनसपैप्टस, न्यू देहली एपलिकेशन एंड कम्पुयेटशन.

आनंद एस.पी. (1984). मैन्टल हैल्थ ऑफ हाई स्कूल स्टूडैंटस इण्डिया एजूकेशन, Rev. No. 9 (5) 46-49.

अलपोर्ट जी.वी. एंड वैरन, पी.एफ. (1931) टैस्ट ऑफ पर्सनल वैल्यूस, साईकोल वोल्युम 26.

अलपोर्ट, जी. डबल्यू. (1961). पैटर्न एंड ग्रोथ इन पर्सनैलिटी, न्यूयार्क, हाल्ट।

एसटीन, ऐ. डब्ल्यू. (1993). 'ब्हट मैटर्स इन कॉलेज : फोर क्रिटिकल इयर्स रिवीजीटिड' जोसी बॉस।